॥ प्रदोष (त्रयोदशी) व्रत कथा, पूजा विधि, उद्यापन विधि ॥

अनुक्रमाणिका

॥ प्रदोष व्रत ॥

इस व्रत के महात्म्य को गंगा के तट पर किसी समय वेदों के ज्ञाता और भगवान के भक्त सूतजी ने शौनकादि ऋषियों को सुनाया था। सूतजी ने कहा है कि कलियुग में जब मनुष्य धर्म के आचरण से हटकर अधर्म की राह पर जा रहा होगा, हर तरफ अन्याय और अनाचार का बोलबाला होगा। मानव अपने कर्तव्य से विमुख होकर नीच कर्म में संलग्न होगा उस समय प्रदोष व्रत ऐसा व्रत होगा जो मानव को शिव की कृपा का पात्र बनाएगा और नीच गति से मुक्त होकर मनुष्य उत्तम लोक को प्राप्त होगा।

सूत जी ने शौनकादि ऋषियों को यह भी कहा कि प्रदोष व्रत से पुण्य से कलियुग में मनुष्य के सभी प्रकार के कष्ट और पाप नष्ट हो जाएंगे। यह व्रत अति कल्याणकारी है इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य को अभीष्ट की प्राप्ति होगी। इस व्रत में अलग-अलग दिन के प्रदोष व्रत से क्या लाभ मिलता है यह भी सूत जी ने बताया। सूत जी ने शौनकादि ऋषियों को बताया कि इस व्रत के महात्मय को सर्वप्रथम भगवान शंकर ने माता सती को सुनाया था। मुझे यही कथा महात्मय महर्षि वेदव्यास जी ने सुनाया और यह उत्तम व्रत महात्म्य मैने आपको सुनाया है।

प्रदोष व्रत विधान सूतजी ने कहा है प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी के व्रत को प्रदोष व्रत कहते हैं। सूर्यास्त के पश्चात रात्रि के आने से पूर्व (सायं काल) का समय प्रदोष काल कहलाता है। मान्यता है कि प्रदोष के समय महादेव कैलाश पर्वत के रजत भवन में इस समय नृत्य करते हैं और देवता उनके गुणों का स्तवन करते हैं। इस व्रत में महादेव भोले शंकर की पूजा की जाती है।

प्रात: काल स्नान करके भगवान शिव की बेल पत्र, गंगाजल अक्षत धूप दीप सहित पूजा करें। संध्या काल में पुन: स्नान करके इसी प्रकार से शिव जी की पूजा करना चाहिए। प्रदोषकाल में घी के दीपक जलायें। कम से कम एक अथवा 32 अथवा 100 अथवा 1000। इस प्रकार प्रदोष व्रत करने से व्रती को पुण्य मिलता है।

प्रदोष एक पाक्षिक व्रत है अर्थात प्रत्येक महीने शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की प्रदोषकालीन त्रयोदशी तिथि को व्रत रखते हैं।

प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी तिथि को ही प्रदोष व्रत क्यों रखा जाता है इसका कारण हो सकता है की प्रदोषकाल है "रजनीमुखम्" तथा त्रयोदशी तिथि के बारे में कहा है "त्रयोदशी सर्वसिद्धा"। अतः इस समय शिव-शक्ति की आराधना से सिद्धि प्राप्त होती हैं जो सम्पूर्ण दोषों का नाश करती हैं। दोष वही है जो पूर्ण न हो और सिद्धि का शाब्दिक अर्थ ही है पूर्णता।

- **त्रयोदश्यां तिथौ सायं प्रदोषः परिकीर्त्तितः।**
तत्र पूज्यो महादेवो नान्यो देवः फलार्थिभिः॥ ॥ १ ॥
- **प्रदोषपूजामाहात्म्यं को नु वर्णयितुं क्षमः।**
यत्र सर्वेऽपि विबुधास्तिष्ठंति गिरिशांतिके॥ ॥ २ ॥
- **प्रदोषसमये देवः कैलासे रजतालये।**
करोति नृत्यं विबुधैरभिष्टुतगुणोदयः॥ ॥ ३ ॥
- **अतः पूजा जपो होमस्तत्कथास्तद्गुणस्तवः।**
कर्त्तव्यो नियतं मर्त्यैश्चतुर्वर्गफला र्थिभिः॥ ॥ ४ ॥
- **दारिद्यतिमिरांधानां मर्त्यानां भवभीरुणाम्।**
भवसागरमग्नानां प्लवोऽयं पारदर्शनः॥ ॥ ५ ॥
- **दुःखशोकभयार्त्तानां क्लेशनिर्वाणमिच्छताम्।**
प्रदोषे पार्वतीशस्य पूजनं मंगलायनम्॥ ॥ ६ ॥ स्कन्द-पुराण

- त्रयोदशी तिथि में सायंकाल को प्रदोष कहा गया है। प्रदोष के समय महादेवजी कैलाशपर्वत के रजत भवन में नृत्य करते हैं और देवता उनके गुणों का स्तवन करते हैं। अतः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की इच्छा रखने वाले पुरुषों को प्रदोष में नियमपूर्वक भगवान शिव की पूजा, होम, कथा और गुणगान करने चाहिए। दरिद्रता के तिमिर से अंधे और भक्तसागर में डूबे हुए संसार भय से भीरु मनुष्यों के लिए यह प्रदोषव्रत पार लगाने वाली नौका है। शिव-पार्वती की पूजा करने से मनुष्य दरिद्रता, मृत्यु-दुःख और पर्वत के समान भारी ऋण-भार को शीघ्र ही दूर करके सम्पत्तियों से पूजित होता है। प्रदोष व्रत भगवान् शिव को अत्यंत प्रिय है। इसमें सभी दोषो का शमन करने की क्षमता है अतः इसको प्रदोष कहते हैं। प्रदोष व्रत का आरम्भ सोमप्रदोष से उत्तम होता है।

- अत्र प्रदोषव्रतम् - निर्णय सिन्धु
  - **पक्षद्वये त्रयोदश्यां निराहारो भवेद्दिवा ।**
    घटीत्रयाद स्तमयात्पूर्वं स्नानं समाचरेत् ॥
  - **शुक्लाम्बरधरो भूत्वा वाग्यतो नियमान्वितः ।**
    कृत संध्या जप विधिः शिवपूजा समारभेत् ॥ ब्रह्मोत्तरखण्ड
  - दोनों पक्ष की त्रयोदशी को दिन में निराहार हो फिर अस्त से तीन घडी पहले स्नान करें। श्वेत वस्त्र पहन वाणी को रोक नियम में तत्पर हो सन्ध्या जप विधि कर शिव का पूजन करे।

  - **एवमाराधयेद्देवं प्रदोषे गिारजापतिम् ।**
    ब्राह्मणान्भोज येत्पश्चादक्षिणामिश्च तोषयेत् ॥
  - **इति दिनेगाहारकर्तकं शिवपूजाप्रधानक मत स्मयते ।।**
  - इस प्रकार गिरजापति की प्रदोष में आराधना करके फिर ब्राह्मणों को जिमाय दक्षिणा दे, इस वचन से दिन में अनाहार पूर्वक प्रधान शिव पूजन का व्रत है।

  - **अत्र प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तत्रैव पूजा विधानात् ।**
  - इसमें प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी।

  - **प्रदोषस्त्रि मुहूर्तमित्यभिप्रापः ।**
  - प्रदोष तीन मुहूर्त का लेना।

  - **दिनाद्वये प्रदोषव्याप्ताव व्याप्तौ वा पूर्वा मयूलतः ॥**
  - दोनों दिन में प्रदोष की व्याप्ति अव्याप्ति हो तो पहली करनी।

  - **त्रयोदशी तु कर्तव्या द्वादशी सहिता मुने ।**
  - हे मुने ! त्रयोदशी द्वादशीयुक्त करनी

  - **दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ, तद्व्याप्तौ, साम्येन तदेकदेशास्पर्शे, च उत्तरा संकल्पकाले सत्त्वान् ।**
    वैषम्ये तदेकस्पर्श तदाधिक्यवती ग्राह्येति विवेचनानुसारेणः ॥
  - जो प्रदोष दोनों दिन हो वा दोनो दिन न हो साम्यता से एक देश में स्पर्श हो तो संकल्प काल में होने से उत्तरा करनी विषमता तथा एक स्पर्श में वा अधिकवती होने से अधिक लेनी।

प्रदोष व्रत एवं पूजन विधि

- प्रदोष व्रत के दिन व्रती को प्रात:काल सूर्योदय से तीन घड़ी (अर्थात 72 मिनट) पूर्व उठकर नित्य क्रम से निवृत हो स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण करें।
- पूरे दिन मन ही मन " ॐ नम: शिवाय " का जप करें।
- दोनों पक्षों की प्रदोषकालीन त्रयोदशी को मनुष्य निराहार रहे। निर्जल तथा निराहार व्रत सर्वोत्तम है परंतु अगर यह संभव न हो तो नक्तव्रत करे। पूरे दिन सामर्थ्यानुसार या तो कुछ न खाये या फल ले। अन्न पूरे दिन नहीं खाना। सूर्यास्त के कम से कम 72 मिनट बाद हविष्यान्न ग्रहण कर सकते हैं।
- अहिंसा, सत्य वाचन, ब्रह्मचर्य, दया, क्षमा, निंदा और इर्ष्या न करना। इन नियमो का पालन करें।
- जितना संभव हो सके मौन धारण करें।
- त्रयोदशी के दिन प्रदोष काल में यानी सुर्यास्त से तीन घड़ी पूर्व, शिव जी का पूजन करना चाहिये। प्रदोष व्रत की पूजा शाम 4:30 बजे से लेकर शाम 7:00 बजे के बीच की जाती है।
- व्रती को चाहिये की शाम को दुबारा स्नान कर स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण कर लें।
- पूजा स्थल अथवा पूजा गृह को शुद्ध कर लें। रंगोली बनाकर मंडप तैयार करें। पूजन सामग्री एकत्रित कर लें। कलश या लोटे में शुद्ध जल भर लें। कुशासन पर बैठ कर संकल्प के साथ पंचामृत से अभिषेक एवं षोडशोपचार शिव जी की पूजा विधि-विधान से करें।
- यदि व्रती चाहे तो शिव मंदिर में भी जा कर पूजा कर सकते हैं।
- इसके बाद हाथ जोड़कर शिव पार्वती युगल दम्पति का ध्यान करके उनकी मानसिक पूजा करे।
- ध्यान का स्वरूप - १ - करोड़ों चंद्रमा के समान कांतिवान, त्रिनेत्रधारी, मस्तक पर चंद्रमा का आभूषण धारण करने वाले पिंगलवर्ण के जटाजूटधारी, नीले कण्ठ तथा अनेक रुद्राक्ष मालाओं से सुशोभित, वरदहस्त, त्रिशूलधारी, नागों के कुण्डल पहने, व्याघ्र चर्म धारण किये हुए, रत्नजड़ित सिंहासन पर विराजमान शिव जी हमारे सारे कष्टों को दूर कर सुख समृद्धि प्रदान करें।
- ध्यान का स्वरूप - २ हे महादेव ! आप ऋण, पातक, दुर्भाग्य और दरिद्रता आदि की निवृत्ति केरें। मैं दु:ख और शोक की आग में जल रहा हूँ, संसार भय से पीड़ित हूँ, अनेक रोगों से व्याकुल और दींन हूँ। वृषवाहन! मेरी रक्षा कीजिये। आप यहाँ पधारिये और मेरी पूजा को पार्वती के साथ ग्रहण कीजिये।
- पंचब्रह्म मंत्र, रुद्रसूक्त, प्रदोषस्तोत्राष्टकम, शिव अष्टोत्तर नाम का पाठ करें।
- प्रदोषकाल में घी के दीपक जलायें। कम से कम एक अथवा 32 अथवा 100 अथवा 1000।
- पूजन के बाद, प्रदोष व्रत की कथा सुने अथवा सुनायें।
- कथा समाप्ति के बाद हवन सामग्री मिलाकर 11 या 21 या 108 बार "ॐ ह्रीं क्लीं नम: शिवाय स्वाहा " मंत्र से आहुति दें।
- उसके बाद शिव जी की आरती करें। उपस्थित जनों को आरती दें। सभी को प्रसाद वितरित करें। उसके बाद भोजन करें। भोजन में केवल मीठी सामग्रियों का उपयोग करें।
- कुछ लोगों की मान्यता है की प्रदोषव्रत के अगले दिन विष्णुपूजा अनिवार्य है।

- **प्रदोष व्रत उद्यापन विधि**
  - स्कंद पुराण के अनुसार व्रती को कम-से-कम 11 अथवा 26 त्रयोदशी व्रत के बाद उद्यापन करना चाहिये।
  - उद्यापन के एक दिन पहले (यानी द्वादशी तिथि को) श्री गणेश भगवान का विधिवत षोडशोपचार विधि से पूजन करें तथा पूरी रात शिव-पार्वती और श्री गणेश जी के भजनों के साथ जागरण करें।
  - उद्यापन के दिन प्रात:काल उठकर नित्य क्रमों से निवृत हो जायें। स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
  - पूजा गृह को शुद्ध कर लें। पूजा स्थल पर रंगीन वस्त्रों और रंगोली से मंडप बनायें। मण्डप में एक चौकी अथवा पटरे पर शिव-पार्वती की प्रतिमा स्थापित करें।
  - शिव-पार्वती की विधि-विधान से पूजा करें। भोग लगायें।
  - प्रदोष व्रत की कथा सुने अथवा सुनायें।
  - हवन के लिये सवा किलो (1.25 किलो.) आम की लकड़ी को हवन कुंड में सजायें। हवन के लिये गाय के दूध में खीर बनायें। हवन कुंड का पूजन करें। दोनों हाथ जोड़कर हवन कुण्ड को प्रणाम करें। अब अग्नि प्रज्वलित करें।
  - कथा समाप्ति के बाद शिव-पार्वती के उद्देश्य से हवन सामग्री या खीर से 11 या 21 या 108 बार ॐ उमा सहित शिवाय नम: या ॐ ह्रीं क्लीं नम: शिवाय स्वाहा मंत्र का उच्चारण करते हुए आहुति दें।
  - हवन पूर्ण होने के पश्चात् शिव जी की आरती करें। उपस्थित जनों को आरती दें।
  - ब्राह्मणों को सामर्थ्यानुसार दान दें एवं भोजन करायें।
  - आप अपने इच्छानुसार एक या दो या पाँच ब्राह्मणों को भोजन एवं दान करा सकते हैं। यदि भोजन कराना सम्भव ना हो तो किसी मंदिर में यथाशक्ति दान करें।
  - इसके बाद बंधु बांधवों सहित प्रसाद ग्रहण करें एवं भोजन करें।
  - भोजन में केवल मीठी सामग्रियों का उपयोग करें।
  - इस प्रकार उद्यापन करने से व्रती पुत्र-पौत्रादि से युक्त होता है तथा आरोग्य लाभ होता है।
  - इसके अतिरिक्त वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है एवं सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर शिवधाम को पाता है।

॥ रवि प्रदोष (रविवार - त्रयोदशी) व्रत कथा ॥

• रविवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे

- जो प्रदोष व्रत रविवार के दिन पड़ता है वो रवि प्रदोष व्रत या भानु वारा प्रदोष व्रत कहलाता है।
- रवि प्रदोष का व्रत रखने से जीवन में सुख, शांति, यश, निरोग जीवन और लंबी आयु प्राप्त होती है।
- रवि प्रदोष का संबंध सूर्य से होता है अत: चंद्रमा के साथ सूर्य भी आपके जीवन में सक्रिय रहता है। इससे चंद्र और सूर्य अच्छा फल देने लगते हैं। जिस जातक कुंडली में सुर्य कमजोर हो उसे यह व्रत करने से उसकी सूर्य संबंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती है।
- यह प्रदोष सूर्य से संबंधित है. सुर्य को ग्रहों का स्वामी कहा जाता है। यह नाम, यश और सम्मान भी दिलाता है। अगर आपकी कुंडली में अपयश के योग हो तो यह प्रदोष व्रत जरुर करें।
- पौराणिक मान्यता के अनुसार जो व्यक्ति प्रदोष का व्रत करता रहता है वह संकटों से दूर रहता है और उनके जीवन में धन और यश बना रहता है।

• रवि प्रदोष व्रत कथा

एक समय सर्व प्राणियों के हितार्थ परम पावन भागीरथी के तट पर ऋषि समाज द्वारा विशाल गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सभा में व्यासजी के परम शिष्य पुराणवेत्ता सूतजी महाराज हरि कीर्तन करते हुए पधारे। सूतजी को आते हुए देखकर शौनकादि 88,000 ऋषि-मुनियों ने खड़े होकर उन्हे दंडवत प्रणाम किया। महाज्ञानी सूतजी ने भक्तिभाव से ऋषियों को हृदय से लगाया तथा आशीर्वाद दिया। विद्वान ऋषिगण और सब शिष्य आसनों पर विराजमान हो गए।

शौनकादि ऋषि ने पूछा- हे पूज्यवर महामते ! कृपया यह बताने का कष्ट करें कि मंगलप्रद, कष्ट निवारक यह व्रत सबसे पहले किसने किया और उसे क्या फल प्राप्त हुआ। श्री सूतजी बोले- आप सभी शिव के परम भक्त हैं, आपकी भक्ति को देखकर मैं व्रती मनुष्यों की कथा कहता हूं। ध्यान से सुनो।

एक ग्राम में एक दीन-हीन ब्राह्मण रहता था। उसकी धर्मनिष्ठ पत्नी प्रदोष व्रत करती थी। उनके एक पुत्र था। एक बार वह पुत्र गंगा स्नान को गया। दुर्भाग्यवश मार्ग में उसे चोरों ने घेर लिया और डराकर उससे पूछने लगे कि उसके पिता का गुप्त धन कहां रखा है। बालक ने दीनता पूर्वक बताया कि वे अत्यन्त निर्धन और दु:खी हैं। हमारे पास धन कहां है? तब चोरों ने कहा कि तेरे इस पोटली में क्या बंधा है? बालक ने नि:संकोच कहा कि मेरी मां ने मेरे लिए रोटियां दी हैं। यह सुनकर चोरों ने अपने साथियों से कहा कि साथियों ! यह बहुत ही दीन-दु:खी मनुष्य है अत: हम किसी और को लूटेंगे। इतना कहकर चोरों ने उस बालक को जाने दिया।

बालक अपनी राह हो लिया। चलते-चलते वह थककर चूर हो गया और बरगद के एक वृक्ष के नीचे सो गया। तभी उस नगर के सिपाही चोरों को खोजते हुए उसी ओर आ निकले। उन्होंने ब्राह्मण-बालक को चोर समझकर बन्दी बना लिया और राजा के सामने उपस्थित किया। राजा ने उसकी बात सुने बगैर उसे कारागार में डलवा दिया। जब ब्राह्मणी का लड़का घर नहीं पहुंचा तो उसे बड़ी चिंता हुई। अगले दिन प्रदोष व्रत था। ब्राह्मणी ने प्रदोष व्रत किया और भगवान शंकर से मन ही मन अपने पुत्र की कुशलता की प्रार्थना करने लगी।

भगवान शंकर ने उस ब्राह्मणी की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उसी रात भगवान शंकर ने उस राजा को स्वप्न में आदेश दिया कि वह बालक चोर नहीं है, उसे प्रात:काल छोड़ दें अन्यथा उसका सारा राज्य-वैभव नष्ट हो जाएगा। प्रात:काल राजा ने शिवजी की आज्ञानुसार उस बालक को कारावास से मुक्त कर दिया। बालक ने अपनी सारी कहानी राजा को सुनाई। सारा वृत्तांत सुनकर राजा ने अपने सिपाहियों को आदेश देकर उस बालक के घर भेजा और उसके माता-पिता को राजदरबार में बुलाया। उसके माता-पिता बहुत ही भयभीत थे। राजा ने उन्हें भयभीत देखकर कहा कि आप भयभीत न हो आपका बालक निर्दोष है। राजा ने ब्राह्मण को 5 गांव दान में दिए जिससे कि वे सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें। भगवान शिव की कृपा से ब्राह्मण परिवार आनंद से रहने लगा।

अत: जो भी मनुष्य रवि प्रदोष व्रत करता है, वह प्रसन्न व निरोग होकर अपना पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

॥ सोम प्रदोष (सोमवार - त्रयोदशी) व्रत कथा ॥

- सोमप्रदोष का वर्णन **शिवपूजा सदा लोके हेतुः स्वर्गापवर्गयोः ।**
  सोमवारे विशेषेण प्रदोषादिगुणान्विते ॥ ॥ १ ॥
- **केवलेनापि ये कुर्युः सोमवारे शिवार्चनम् ।**
  न तेषां विद्यते किंचिदिहामुत्र च दुर्लभम् ॥ ॥ २ ॥
- **उपोषितः शुचिर्भूत्वा सोमवारे जितेंद्रियः ।**
  वैदिकैर्लौकिकैर्वापि विधिवत्पूजयेच्छिवम् ॥ ॥ ३ ॥
- **ब्रह्मचारी गृहस्थो वा कन्या वापि सभर्त्तृका ।**
  विभर्तृका वा संपूज्य लभते वरमीप्सितम् ॥ ॥ ४ ॥ स्कन्द-पुराण

संसार में भगवान शिव की पूजा सदा ही स्वर्ग और मोक्ष का हेतु है। यदि सोमप्रदोष के दिन यह पूजा की जाए तो उसका विशेष महात्म्य है। जो सोमवार को भगवान शंकर की पूजा करते हैं, उनके लिए इहलोक और परलोक में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं। सोमवार को उपवास करके इंद्रियों को वश में रखते हुए वैदिक अथवा लौकिक मंत्रों से विधिपूर्वक भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, कन्या, सुहागिन स्त्री अथवा विधवा कोई भी क्यों न हो, भगवान शिव की पूजा करके मनोवांछित वर पाता है।

- **मत्स्वरुपो यतो वारस्ततः सोम इति स्मृतः ।**
- **प्रदाता सर्वराज्यस्य श्रेष्ठश्चैव ततो हि सः ।**
  समस्तराज्यफलदो वृतकर्तुर्यतो हि सः ॥
- सोमवार मेरा ही स्वरूप है, अतः इसे सोम कहा गया है। इसीलिये यह समस्त राज्य का प्रदाता तथा श्रेष्ठ है। व्रत करने वाले को यह सम्पूर्ण राज्य का फल देने वाला है।
- **सोमे मत्पूजा नक्तभोजनं ।**
- अर्थात सोमवार को शिव पूजा और नक्तम् (रात्रि) भोजन करना चाहिए।
- **कृष्णे नाचरितं पूर्वं सोमवार व्रतं शुभम् ।**
- पूर्वकाल में सर्वप्रथम श्रीकृष्ण ने ही इस मंगलकारी सोमवार व्रत को किया था।
- **निशि यत्नेन कर्तव्यंभोजनं सोमवासरे ।**
  उभयोः पक्षयोर्विष्णो सर्वस्मिञ्छिव तत्परैः॥ शिवपुराण,कोटिरुद्रसंहिता
- यानी दोनों पक्षों में प्रत्येक सोमवार को प्रयत्न पूर्वक केवल नक्तम् भोजन (रात में ही भोजन) करना चाहिए। शिव के व्रत में तत्पर रहने वाले लोगों के लिए यह अनिवार्य नियम है।
- **अष्टमी सोमवारे च कृष्णपक्षे चतुर्दशी ।**
  शिवतुष्टिकरं चैतन्नात्र कार्या विचारणा ॥
- सोमवार की अष्टमी तथा कृष्णपक्ष चतुर्दशी इन दो तिथियों को व्रत रखा जाए तो वह भगवान शिव को संतुष्ट करने वाला होता है, इसमें अन्यथा विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

- सोमवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे

    - सोम प्रदोष के दिन निर्जला व्रत रखने से मन मुताबिक फल मिलता है।
    - सोमवार शिवजी का दिन है इस दिन शिव-पार्वती की पूजा से प्रदोष फल दोगुना हो जाता है।
    - संतान प्राप्ति की मनोकामना से भी यह व्रत रखा जाता है।
    - सोम प्रदोष व्रत से कुंडली में चंद्रमा, शुक्र एवं बुध का नकारात्मक असर कम होता है। कुल मिलाकर इससे मानसिक बैचेनी खत्म होती है। व्यक्ति के सौभाग्य और आयु में वृद्धि होती है।
    - रवि प्रदोष, सोम प्रदोष व शनि प्रदोष के समस्त त्रयोदशी के व्रत को यदि कोई भी 11 अथवा एक वर्ष के करता है तो उसकी समस्त मनोकामनाएं अवश्य और शीघ्रता से पूर्ण होती है।

- **सोम प्रदोष व्रत कथा**

सूत जी बोले - है ऋषिवरों ! अब मैं सोम त्रयोदशी व्रत का महात्म्य वर्णन करता हूँ। प्रातः स्नानादि कर शुद्ध पवित्र हो शिव पार्वती का ध्यान करके पूजन करें और अर्घ्य दें। " ॐ नमः शियाय " इस मन्त्र का १०८ बार जाप करें फिर स्तुति करें - हे प्रभो ! मैं इस दुःख सागर में गोते खाता हुआ ऋण भार से दबा, ग्रहदशा से ग्रसित हूँ, हे दयालु ! मेरी रक्षा कीजिए।

शौनकादि ऋषि बोले - हे पूज्यवर महामते, आपने यह व्रत सम्पूर्ण कामनाओं के लिए बताया है, अब कृपा कर यह बताने का कष्ट करें कि यह व्रत किसने किया व क्या फल पाया ?

सूत जी बोले - एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गवास हो गया था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए प्रातः होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी।

एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में कराहता हुआ मिला। ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और राज्य पर नियंत्रण कर लिया था, इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण-पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर रहने लगा।

एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ दिनों बाद अंशुमति के माता-पिता को शंकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसा ही किया।

ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया और पिता के राज्य को पुनः प्राप्त कर आनन्द पूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण-पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया। ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के माहात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण-पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही शंकर भगवान अपने दुसरे भक्तों के दिन भी फेरते हैं।

॥ भौम प्रदोष (मंगलवार - त्रयोदशी) व्रत कथा ॥

मंगलवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे

- जो प्रदोष व्रत मंगलवार के दिन पड़ता है वो भौम प्रदोष व्रत या मंगल प्रदोष व्रत कहलाता है।
- इस व्रत को रखने से भक्तों की स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी समस्याए दूर होती है और उनके शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार आता है।
- भोम प्रदोष व्रत जीवन में समृद्धि लाता है।

भौम प्रदोष व्रत कथा

सूत जी बोले - एक नगर में एक वृद्धा निवास करती थी। उसके मंगलिया नामक एक पुत्र था। वृद्धा की हनुमान जी पर गहरी आस्था थी। वह प्रत्येक मंगलवार को नियम पूर्वक व्रत रखकर हनुमान जी की आराधना करती थी। उस दिन वह न तो घर लीपती थी और न ही मिट्टी खोदती थी। वृद्धा को व्रत करते हुए अनेक दिन बीत गए।

एक बार हनुमान जी ने उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने की सोची। हनुमान जी साधु का वेश धारण कर वहां गए और पुकारने लगे - है कोई हनुमान भक्त जो हमारी इच्छा पूर्ण करे ? पुकार सुन वृद्धा बाहर आई और बोली - आज्ञा महाराज ? साधु वेशधारी हनुमान बोले - मैं भूखा हूं भोजन करूंगा। तू थोड़ी जमीन लीप दे। वृद्धा दुविधा में पड़ गई। अंततः हाथ जोड़ बोली - महाराज ! लीपने और मिट्टी खोदने के अतिरिक्त आप कोई दूसरी आज्ञा दें, मैं अवश्य पूर्ण करूंगी।

साधु ने तीन बार प्रतिज्ञा कराने के बाद कहा - तू अपने बेटे को बुला। मै उसकी पीठ पर आग जलाकर भोजन बनाउंगा। वृद्धा के पैरों तले धरती खिसक गई, परंतु वह प्रतिज्ञाबद्ध थी। उसने मंगलिया को बुलाकर साधु के सुपुर्द कर दिया। मगर साधु रूपी हनुमान जी ऐसे ही मानने वाले न थे। उन्होंने वृद्धा के हाथों से ही मंगलिया को पेट के बल लिटवाया और उसकी पीठ पर आग जलवाई। आग जलाकर, दुखी मन से वृद्धा अपने घर के अन्दर चली गई।

इधर भोजन बनाकर साधु ने वृद्धा को बुलाकर कहा - मंगलिया को पुकारो, ताकि वह भी आकर भोग लगा ले। इस पर वृद्धा बहते आंसुओं को पौंछकर बोली - उसका नाम लेकर मुझे और कष्ट न पहुंचाओ। लेकिन जब साधु महाराज नहीं माने तो वृद्धा ने मंगलिया को आवाज लगाई। पुकारने की देर थी कि मंगलिया दौड़ा-दौड़ा आ पहुंचा। मंगलिया को जीवित देख वृद्धा को सुखद आश्चर्य हुआ। वह साधु के चरणों मे गिर पड़ी। साधु अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुए। हनुमान जी को अपने घर में देख वृद्धा का जीवन सफल हो गया। सूत जी बोले - मंगल प्रदोष व्रत से शंकर (हनुमान भी रुद्र हैं) और पार्वती जी इसी तरह भक्तों को साक्षात् दर्शन दे कृतार्थ करते हैं।

॥ बुध प्रदोष (सौम्य / बुधवार - त्रयोदशी) व्रत कथा ॥

- बुधवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे

  - जो प्रदोष व्रत बुधवार के दिन पड़ता है वो बुध प्रदोष व्रत या सौम्यवारा प्रदोष व्रत कहलाता है।
  - इस व्रत में दिन में केवल एक बार भोजन करना चाहिये।
  - इसमें हरी वस्तुओं का प्रयोग किया जाना जरुरी है।
  - इस शुभ दिन पर व्रत रखने से भक्तों की सभी इच्छाएं पूरी होती है और ज्ञान भी प्राप्त होता हैं।

- **बुध प्रदोष व्रत कथा**

एक पुरुष का नया-नया विवाह हुआ। विवाह के दो दिनों बाद उसकी पत्नी मायके चली गई। कुछ दिनों के बाद वह पुरुष पत्नी को लेने अपने ससुराल पहुंचा। बुधवार को जब वह पत्नी के साथ लौटने लगा तो ससुराल पक्ष ने उसे रोकने का प्रयत्न किया कि विदाई के लिए बुधवार शुभ नहीं होता। लेकिन वह अपनी जिद से टस से मस नहीं हुआ। विवश होकर सास-ससुर को अपने जमाता और पुत्री को भारी मन से विदा करना पड़ा।

पति-पत्नी बैलगाड़ी में चले जा रहे थे। एक नगर के बाहर निकलते ही पत्नी को प्यास लगी। पति लोटा लेकर पानी की तलाश में चल पड़ा। पत्नी एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद पति पानी लेकर वापस लौटा उसने देखा कि उसकी पत्नी किसी के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही है और उसके लोटे से पानी पी रही है। उसको क्रोध आ गया। वह निकट पहुंचा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उस आदमी की सूरत उसी की भांति थी। पत्नी भी सोच में पड़ गई।

हम शक्ल आदमियों को झगड़ते हुए काफी देर हो गई तो वहाँ आने जाने वालों की भीड़ एकत्र हो गई, सिपाही भी आ गए। हम शक्ल आदमियों को देख वे भी आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने स्त्री से पूछा 'उसका पति कौन है?' वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई।

बीच राह में अपनी पत्नी को इस तरह लुटा देखकर उस पुरुष की आँख भर आई। तब वह शंकर भगवान से प्रार्थना करने लगा - हे भगवान ! आप मेरी और मेरी पत्नी की रक्षा करें। मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने सास-श्वशुर की बात नहीं मानी और बुधवार को पत्नी को विदा करा लिया। मैं भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूंगा।

जैसे ही उसकी प्रार्थना पूरी हुई, दूसरा पुरुष अन्तर्धान हो गया। पति-पत्नी सकुशल अपने घर पहुंच गए। उस दिन के बाद से पति-पत्नी नियम पूर्वक बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत रखने लगे।

॥ गुरु प्रदोष (बृहस्पतिवार – त्रयोदशी) व्रत कथा ॥

- गुरुवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे

  - जो प्रदोष व्रत गुरुवार के दिन पड़ता है वो गुरु प्रदोष व्रत कहलाता है।
  - इस उपवास को रख कर भक्त अपने सभी मौजूदा खतरों एवं शत्रु को समाप्त कर सकते हैं।
  - इसके अलावा गुरुवार प्रदोष व्रत रखने से पूर्वजों का आशीर्वाद मिलता है।

- **गुरु प्रदोष व्रत कथा**

एक बार इन्द्र और वृत्रासुर की सेना में घनघोर युद्ध हुआ। देवताओं ने दैत्य-सेना को पराजित कर नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। यह देख वृत्रासुर अत्यन्त क्रोधित हो स्वयं युद्ध को उद्यत हुआ। मायावी आसुर ने आसुरी माया से उसने भयंकर विकराल रूप धारण कर लिया। उसके स्वरुप को देख इन्द्रादिक सभी देवता भयभीत हो गुरुदेव बृहस्पति की शरण में पहूंचे। बृहस्पति महाराज बोले - पहले मैं तुम्हे वृत्रासुर का वास्तविक परिचय दे दूं।

वृत्रासुर बड़ा तपस्वी और कर्मनिष्ठ है। उसने गन्धमादन पर्वत पर घोर तपस्या कर शिव जी को प्रसन्न किया। पूर्व समय में वह चित्ररथ नाम का राजा था। एक बार वह अपने विमान से कैलाश पर्वत चला गया। वहां शिव जी के वाम अंग में माता पार्वती को विराजमान देख वह उपहास पूर्वक बोला - हे प्रभो ! मोह-माया में फंसे होने के कारण हम स्त्रियों के वशीभूत रहते हैं। किन्तु देवलोक में ऐसा दृष्टिगोचर नहीं हुआ कि स्त्री आलिंगन बद्ध हो सभा में बैठे। चित्ररथ के यह वचन सुन सर्वव्यापी शिव-शंकर हंसकर बोले - हे राजन ! मेरा व्यावहारिक दृष्टिकोण पृथक है। मैंने मृत्युदाता-कालकूट महाविष का पान किया है, फिर भी तुम साधारण जन की भांति मेरा उपहास उड़ाते हो !

माता पार्वती क्रोधित हो चित्ररथ की ओर देखती हुई कहने लगी - अरे दुष्ट ! तूने सर्वव्यापी महेश्वर के साथ ही मेरा भी उपहास उड़ाया है। अतएव मैं तुझे वह शिक्षा दूंगी कि फिर तू ऐसे संतों के उपहास का दुस्साहस नहीं करेगा - अब तू दैत्य स्वरूप धारण कर विमान से नीचे गिर, मैं तुझे शाप देती हूं। जगदम्बा भवानी के अभिशाप से चित्ररथ राक्षस योनि को प्राप्त हो गया और त्वष्टा नामक ऋषि के श्रेष्ठ तप से उत्पन्न हो वृत्रासुर बना।

गुरुदेव बृहस्पति आगे बोले - वृत्तासुर बाल्यकाल से ही शिवभक्त रहा है। अतः हे इन्द्र तुम बृहस्पति प्रदोष व्रत कर शंकर भगवान को प्रसन्न करो। देवराज ने गुरुदेव की आज्ञा का पालन कर बृहस्पति प्रदोष व्रत किया। गुरु प्रदोष व्रत के प्रताप से इन्द्र ने शीघ्र ही वृत्रासुर पर विजय प्राप्त कर ली और देवलोक में शान्ति छा गई।

॥ शुक्र प्रदोष (शुक्रवार / भृगुवारा) व्रत कथा ॥

- शुक्रवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे
  - जो प्रदोष व्रत शुक्रवार के दिन पड़ता है वो शुक्र प्रदोष या भृगुवारा प्रदोष व्रत कहलाता है।
  - सौभाग्य और स्त्री की समृद्धि के लिये शुक्र प्रदोष व्रत करें।
  - इस व्रत को करने से जीवन से नकारात्मकता समाप्त होती है और सफलता मिलती है।

- **शुक्र प्रदोष व्रत कथा**

सूत जी बोले - प्राचीनकाल की बात है, एक नगर में तीन मित्र रहते थे, तीनों में ही घनिष्ट मित्रता थी। उनमें एक राजकुमार पुत्र, दूसरा ब्राह्मण पुत्र और तीसरा धनिक (सेठ) पुत्र था। राजकुमार व ब्राह्मण कुमार का विवाह हो चुका था। धनिक पुत्र का भी विवाह हो गया था, किन्तु गौना शेष था।

एक दिन तीनों मित्र स्त्रियों की चर्चा कर रहे थे। ब्राह्मण पुत्र ने नारियों की प्रशंसा करते हुए कहा - " नारीहीन घर भूतों का डेरा होता है। " धनिक पुत्र ने यह सुना तो तुरन्त ही अपनी पत्नी को लाने का निश्चय किया। सेठ पुत्र अपने घर गया और अपने माता-पिता से अपना निश्चय बताया। उन्होंने बेटे से कहा कि अभी शुक्र देवता डूबे हुए हैं। ऐसे में बहू-बेटियों को उनके घर से विदा करवा लाना शुभ नहीं होता। अतः शुक्रोदय के बाद तुम अपनी पत्नी को विदा करा लाना। किन्तु धनिक पुत्र नहीं माना और ससुराल जा पहुंचा। ससुराल में भी उसे रोकने की बहुत कोशिश की गई, मगर उसने जिद नहीं छोड़ी। माता-पिता को विवश होकर अपनी कन्या की विदाई करनी पड़ी।

ससुराल से विदा हो पति-पत्नी नगर से बाहर निकले ही थे कि उनकी बैलगाड़ी का पहिया अलग हो गया और एक बैल की टांग टूट गई। दोनों को काफी चोटें आईं फिर भी वे आगे बढ़ते रहे। कुछ दूर जाने पर उनकी भेंट डाकुओं से हो गई। डाकू धन-धान्य लूट ले गए। दोनों रोते-पीटते घर पहूंचे। वहां धनिक पुत्र को सांप ने डस लिया। उसके पिता ने वैद्य को बुलवाया। वैद्य ने निरीक्षण के बाद घोषणा की कि धनिक पुत्र तीन दिन में मर जाएगा।

जब ब्राह्मण कुमार को यह समाचार मिला तो वह तुरन्त आया। उसने माता-पिता को शुक्र प्रदोष व्रत करने का परामर्ष दिया और कहा - इसे पत्नी सहित वापस ससुराल भेज दें। यह सारी बाधाएं इसलिए आई हैं क्योंकि आपका पुत्र शुक्रास्त में पत्नी को विदा करा लाया है। यदि यह वहां पहुंच जाएगा तो बच जाएगा। धनिक को ब्राह्मण कुमार की बात जंच गई और अपनी पुत्रवधु और पुत्र को वापिस लौटा दिया। ससुराल पहुंचते ही धनिक कुमार की हालत ठीक होती चली गई। शुक्र प्रदोष के माहात्म्य से सभी घोर कष्ट टल गए। तत्पश्चात उन्होंने शेष जीवन सुख आनन्द पूर्वक व्यतीत किया और अन्त में वह पति-पत्नी दोनों स्वर्ग लोक को गये।

॥ शनि प्रदोष (शनिवार - त्रयोदशी) व्रत कथा ॥

- शनिवार को प्रदोष का व्रत रखने के फायदे
  - शनिवार को प्रदोष काल में त्रयोदशी तिथि हो तो उसे शनिप्रदोष कहा जाता है।
  - शनि प्रदोष व्रत सभी प्रदोष व्रतों में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।
  - संतान प्राप्ति के लिए शनि प्रदोष व्रत एक अचूक उपाय है।
  - खोया हुआ राज्य व पद प्राप्ति कामना हेतु शनि प्रदोष व्रत करें।
  - विभिन्न मतों से शनिप्रदोष को महाप्रदोष तथा दीपप्रदोष भी कहा जाता है।
  - कुछ विद्वान केवल कृष्णपक्ष के शनिप्रदोष को ही महाप्रदोष मानते हैं।
  - ऐसी मान्यता है की शनिप्रदोष का दिन शिव पूजा के लिए सर्वश्रेष्ठ है।
  - अगर कोई व्यक्ति लगातार 4 शनिप्रदोष करता है तो उसके जन्म जन्मांतर के पाप धूल जाते हैं साथ ही वह पितृऋण से भी मुक्त हो जाता है।
  - जो व्यक्ति इस दिन व्रत रखता है वह खोये हुए धन एवं जीवन में सफलता प्राप्त करता है।
  - अगर संभव हो सके तो शनिप्रदोष को सांयकाल 1000 अथवा 100 अथवा कम से कम 32 दीपक शिव मंदिर में जरूर जलाएं। सर्वोत्तम रहेगा अगर आप किसी ज्योतिर्लिंग के दर्शन करे लें।

- शनिप्रदोष व्रत की महिमा के बारे में हनुमान जी कहते हैं। कि .....
  - **एष गोपसुतो दिष्ट्या प्रदोषे मंदवा सरे।**
    अमंत्रेणापि संपूज्य शिवं शिवमवाप्तवान् ॥
  - एक गोप बालक ने शनि प्रदोष के दिन बिना मंत्र के भी शिव पूजन कर उन्हें पा लिया।
  - **मन्दवारे प्रदोषोऽयं दुर्लभः सर्वदेहिनाम्।**
    तत्रापि दुर्लभस् तस्मिन् कृष्णपक्षे समागते ॥ स्कन्दपुराण - ब्रह्ममोत्तरखंड
  - शनिवार को प्रदोष व्रत सभी देह धारियों के लिए दुर्लभ है। कृष्णपक्ष आने पर तो यह और भी दुर्लभ है।
  - **कार्तिके शुक्लपक्षे तु मंदवारे त्रयोदशी।**
    समग्रा यदि लभ्येत सर्वप्राप्तयै न संशयः ॥ स्कन्दपुराण - केदारखंड
  - कार्तिक मास की शुक्लपक्ष में शनिवार के दिन यदि पूरी त्रयोदशी मिले तो यह समझना चाहिए की मुझे सब कुछ प्राप्त हो गया है। उस दिन प्रदोष काल मैं सब कामनाओ की सिद्धि के लिए लिंगरूप धारी भगवान् शिव का पूजन करना चाहिए।
  - **इदं च मन्दवारे कृष्णपक्षेऽति प्रशस्तम्** यह प्रदोष शनि भौमवार का कृष्णपक्ष में हो तो उत्तम है।
  - **आरम्भश्च शनिप्रदोषे कार्य :** शनि प्रदोष से इसका आरम्भ करें।
  - **यदा त्रयोदशी शुक्ला मन्दवारण संयुता। आरंभेत व्रतं तत्र संतान फलसिद्धये।**
  - शुक्ल त्रयोदशी शनिवार हो तो सन्तान फल की शिद्धि के निमित्त उस समय व्रत आरम्भ करे।

• शनि प्रदोष व्रत कथा - १

गर्गाचार्य जी ने कहा - हे महामते ! आपने शिव शंकर प्रसन्नता हेतु समस्त प्रदोष व्रतों का वर्णन किया अब हम शनि प्रदोष विधि सुनने की इच्छा रखते हैं, सो कृपा करके सुनाइये। तब सूत जी बोले - हे ऋषि ! निश्चयात्मक रूप से आपका शिव - पार्वती के चरणों में अत्यन्त प्रेम है, मैं आपको शनि त्रयोदशी के व्रत की कथा बतलाता हूँ, सो ध्यान से सुनें।

पुरातन कथा है कि एक निर्धन ब्राह्मण की स्त्री दरिद्रता से दुःखी हो शांडिल्य ऋषि के पास जाकर बोली - हे महामुने ! मैं अत्यन्त दुःखी हूँ दुःख निवारण का उपाय बतलाइये। मेरे दोनों पुत्र आपकी शरण में हैं। मेरे ज्येष्ठ पुत्र का नाम धर्म है जो कि राजपुत्र है और लघु पुत्र का नाम शुचिव्रत है अतः हम दरिद्री हैं, आप ही हमारा उद्धार कर सकते हैं, इतनी बात सुन ऋषि ने शिव प्रदोष व्रत करने के लिए कहा। तीनों प्राणी प्रदोष व्रत करने लगे। कुछ समय पश्चात् प्रदोष व्रत आया तब तीनों ने व्रत का संकल्प लिया। छोटा लड़का जिसका नाम शुचिव्रत था एक तालाब पर स्नान करने को गया तो उसे मार्ग में स्वर्ण कलश धन से भरपूर मिला, उसको लेकर वह घर आया, प्रसन्न हो माता से कहा कि माँ ! यह धन मार्ग से प्राप्त हुआ है, माता ने धन देखकर शिव महिमा का वर्णन किया। राजपुत्र को अपने पास बुलाकर बोली देखो पुत्र, यह धन हमें शिवजी की कृपा से प्राप्त हुआ है। अतः प्रसाद के रूप में दोनों पुत्र आधा आधा बाँट लो, माता का वचन सुन राजपुत्र ने शिव - पार्वती का ध्यान किया और बोला - पूज्य यह धन आपके पुत्र का ही है मैं इसका अधिकारी नहीं हूँ। मुझे शंकर भगवान और माता पार्वती जब देंगे तब लूंगा। इतना कहकर वह राजपुत्र शंकर जी की पूजा में लग गया, एक दिन दोनों भाईयों का प्रदेश भ्रमण का विचार हुआ, वहाँ उन्होंने अनेक गन्धर्व कन्याओं को क्रीड़ा करते हुए देखा, उन्हें देख शुचिव्रत ने कहा - भैया अब हमें इससे आगे नहीं जाना है, इतना कह शुचिव्रत उसी स्थान पर बैठ गया, लेकिन राजकुमार अकेले महिलाओं के बीच जा पहुंचा। वहाँ एक स्त्री अति सुन्दर राजकुमार को देखकर मोहित हो गई और राजकुमार के पास पहुँचकर कहने लगी, हे मित्रों ! इस जंगल के पास एक और जंगल है, तुम वहाँ जाकर देखो भाँति-भाँति के पुष्प खिले है, बड़ा सुहावना समय है, उसकी शोभा देखकर आओ, मैं यहाँ बैठा हूँ, मेरे पैरों में बहुत दर्द है। यह सुनकर सभी महिलाएं दूसरे जंगल में चली गईं। वह अकेले ही सुंदर राजकुमार को देखती रही। इधर राजकुमार भी कामुक निगाहों से देखने लगा, युवती बोली - आप कहां रहते हैं ? वन में कैसे पधारे ? किस राजा के पुत्र हैं ? क्या नाम है ? राजकुमार ने कहा - मैं विदर्भ राजा का पुत्र हूं, आप अपना परिचय दें। युवती बोली - मैं विद्राविक नामक गंधर्व की पुत्री हूँ, मेरा नाम अंशुमति है। मैने आपकी मनःस्थिति को जान लिया है कि आप मुझ पर मोहित है। विधाता ने हमारा तुम्हारा संयोग मिलाया है। युवती ने राजकुमार के गले में मोतियों की माला डाल दी। राजकुमार हार स्वीकार करते हुए बोला कि हे भद्रे ! मैंने आपका प्रेमोपहार स्वीकार कर लिया है, परन्तु मैं निर्धन हूँ। राजकुमार के इन वचनों को सुनकर गन्धर्व कन्या बोली कि मैं जैसा कह चुकी हूं वैसा ही करूंगी, अब आप अपने घर जायें। इतना कहकर वह गन्धर्व कन्या सखियों से जा मिली। घर जाकर राजकुमार ने शुचिव्रत को सारा वृतांत कह सुनाया।

जब तीसरा दिन आया वह राजपुत्र शुचिव्रत को लेकर उसी वन में जा पहुँचा, वही गन्धर्व राज अपनी कन्या को लेकर आ पहुँचा। इन दोनों राजकुमारों को देख आसन दे कहा कि मैं कैलाश पर गया था वहाँ शंकर जी ने मुझसे कहा कि धर्मगुप्त नाम का राजपुत्र है जो इस समय राज्य विहीन निर्धन है, मेरा परम भक्त है, हे गन्धर्व राज ! तुम उसकी सहायता करो, मैं महादेव जी की आज्ञा से इस कन्या को आपके पास लाया हूँ। आप इसका निर्वाह करें, मैं आपकी सहायता कर आपको राजगद्दी पर बिठा दूंगा। इस प्रकार गन्धर्व राज ने कन्या का विधिवत विवाह कर दिया। विशेष धन और सुन्दर गन्धर्व कन्या को पाकर राजपुत्र अति प्रसन्न हुआ। भगवन कृपा से यह समयोपरान्त अपने शत्रुओं को दमन करके राज्य का सुख भोगने लगा।

• शनि प्रदोष व्रत कथा - २

प्राचीन समय की बात है। एक नगर सेठ धन-दौलत और वैभव से सम्पन्न था। वह अत्यन्त दयालु था। उसके यहां से कभी कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह सभी को जी भरकर दान-दक्षिणा देता था। लेकिन दूसरों को सुखी देखने वाले सेठ और उसकी पत्नी स्वयं काफी दुखी थे। दुःख का कारण था उनके सन्तान का न होना। सन्तानहीनता के कारण दोनों घुले जा रहे थे।

एक दिन उन्होंने तीर्थयात्र पर जाने का निश्चय किया और अपने काम-काज सेवकों को सोंप चल पडे। अभी वे नगर के बाहर ही निकले थे कि उन्हें एक विशाल वृक्ष के नीचे समाधि लगाए एक तेजस्वी साधु दिखाई पड़े। दोनों ने सोचा कि साधु महाराज से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा शुरू की जाए। पति-पत्नी दोनों समाधिलीन साधु के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए और उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह से शाम और फिर रात हो गई, लेकिन साधु की समाधि नही टूटी। मगर सेठ पति-पत्नी धैर्य पूर्वक हाथ जोड़े पूर्ववत बैठे रहे।

अंततः अगले दिन प्रातः काल साधु समाधि से उठे। सेठ पति-पत्नी को देख वह मन्द-मन्द मुस्कराए और आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठाकर बोले - मैं तुम्हारे अन्तर्मन की कथा भांप गया हूं वत्स ! मैं तुम्हारे धैर्य और भक्ति-भाव से अत्यन्त प्रसन्न हूं। साधु ने सन्तान प्राप्ति के लिए उन्हें शनि प्रदोष व्रत करने की विधि समझाई और शंकर भगवान की निम्न वन्दना बताई

- **हे रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिव शंकर जगगुरु नमस्कार॥**
- **हे नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चन्द्र सुख नमस्कार॥**
- **हे उमाकान्त सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार॥**
- **ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार॥**

तीर्थयात्रा के बाद दोनों वापस घर लौटे और नियम पूर्वक शनि प्रदोष व्रत करने लगे। कालान्तर में सेठ की पत्नी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से उनके यहां छाया अन्धकार लुप्त हो गया। दोनों आनन्द पूर्वक रहने लगे।

॥ गिरिजापति की प्रार्थना ॥

॥ प्रदोष स्तोत्रम् / दरिद्रता-नाशक तथा धन-सम्पत्ति-दायक स्तोत्रम् ॥

- जय देव जगन्नाथ, जय शंकर शाश्वत ।
  जय सर्व-सुराध्यक्ष, जय सर्व-सुरार्चित ॥ ॥ १ ॥
- जय सर्व-गुणातीत, जय सर्व-वर- प्रद ।
  जय नित्य-निराधार, जय विश्वम्भराव्यय ॥ ॥ २ ॥
- जय विश्वैक-वेद्येश, जय नागेन्द्र-भूषण ।
  जय गौरी-पते शम्भो, जय चन्द्रार्ध-शेखर ॥ ॥ ३ ॥
- जय कोट्यर्क-संकाश, जयानन्त-गुणाश्रय ।
  जय रुद्र-विरुपाक्ष, जय चिन्त्य-निरञ्जन ॥ ॥ ४ ॥
- जय नाथ कृपा-सिन्धो, जय भक्तार्त्ति-भञ्जन ।
  जय दुस्तर-संसार- सागरोत्तारण-प्रभो ॥ ॥ ५ ॥
- प्रसीद मे महा-भाग, संसारार्त्तस्य खिद्यतः।
  सर्व-पाप- भयं हृत्वा, रक्ष मां परमेश्वर ॥ ॥ ६ ॥
- महा-दारिद्रय- मग्नस्य, महा-पाप- हृतस्य च ।
  महा-शोक- विनष्टस्य, महा-रोगातुरस्य च ॥ ॥ ७ ॥
- ऋणभार-परीत्तस्य, दह्यमानस्य कर्मभिः ।
  ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य, प्रसीद मम शंकर ॥ ॥ ८ ॥

- फल-श्रुतिः दारिद्रयः प्रार्थयेदेवं, पूजान्ते गिरिजा-पतिम् ।
  अर्थाढ्यो वापि राजा वा, प्रार्थयेद् देवमीश्वरम् ॥ ॥ ९ ॥
- दीर्घमायुः सदाऽऽरोग्यं, कोष-वृद्धिर्बलोन्नतिः।
  ममास्तु नित्यमानन्दः, प्रसादात् तव शंकर ॥ ॥१०॥
- शत्रवः संक्षयं यान्तु, प्रसीदन्तु मम गुहाः ।
  नश्यन्तु दस्यवः राष्ट्रे, जनाः सन्तुं निरापदाः ॥ ॥११॥
- दुर्भिक्षमरि-सन्तापाः, शमं यान्तु मही-तले ।
  सर्व-शस्य समृद्धिनां, भूयात् सुख-मया दिशः ॥ ॥१२॥
- एवमाराधयेद् देवं पूजान्ते गिरिजापतिम् ।
  ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् दक्षिणाभिश्च पूजयेत् ॥ ॥१३॥
- सर्वपापक्षयकरी सर्वरोगनिवारिणी ।
  शिवपूजा मयाख्याता सर्वाभीष्टफलप्रदा ॥ ॥१४॥

॥ इति प्रदोष स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ प्रदोष स्तोत्राष्टकम् ॥

- सत्यं ब्रवीमि परलोकहितं ब्रव्रीम सारं ब्रवीम्युपनिषद्धृदयं ब्रमीमि ।
  संसारमुल्बणमसारमवाप्य जन्तोः सारोऽयमीश्वरपदाम्बुरुहस्य सेवा ॥ ॥ १ ॥
- ये नार्चयन्ति गिरिशं समये प्रदोषे, ये नाचितं शिवमपि प्रणमन्ति चान्ये ।
  एतत्कथां श्रुतिपुटैर्न पिबन्ति मूढास्ते, जन्मजन्मसु भवन्ति नरा दरिद्राः ॥ ॥ २ ॥
- ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य, कुर्वन्त्यनन्यमनसांऽघ्रिसरोजपूजाम् ।
  नित्यं प्रवृद्ध धन-धान्य कलत्रपुत्र सौभाग्य सम्पदधिकास्त इहैव लोके ॥ ॥ ३ ॥
- कैलासशैवभुवने त्रिजगज्जनिनित्रीं गौरीं निवेश्य कनकाचितरत्नपीठे ।
  नृत्यं विधातुमभिवांछति शूलपाणौ देवाः प्रदोष समये नु भजन्ति सर्वे ॥ ॥ ४ ॥

- वाग्देवी धृतवल्लकी शतमखो वेणुं दधत्पद्मजस्तालोन्निद्रकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता ।
  विष्णुः सान्द्रमृदंङवादनपयुर्देवाः समन्तात्स्थिताः, सेवन्ते तमनु प्रदोषसमये देवं मृडानीपातम् ॥५॥

- गन्धर्वयक्षपतगोरग-सिद्ध- साध्व-विद्याधराम रवराप्सरसां गणश्च ।
  येऽन्ये त्रिलोकनिकलयाः सहभूतवर्गाः प्राप्ते प्रदोष समये हरपार्श्र्वसंस्थाः ॥ ६ ॥
- अतः प्रदोषे शिव एक एव पूज्योऽथ नान्ये हरिपद्मजाद्याः ।
  तस्मिन्महेशे विधिनेज्यमाने सर्वे प्रसीदन्ति सुराधिनाथाः॥ ॥ ७ ॥
- एष ते तनयः पूर्वजन्मनि ब्राह्मणोत्तमः ।
  प्रतिग्रहैर्वयो निन्ये न दानाद्यैः सुकर्मभिः ॥ ॥ ८ ॥
- अतो दारिद्र्यमापन्नः पुत्रस्ते द्विजभामिनि ।
  तद्दोषपरिहारार्थं शरणां यातु शंकरम् ॥ ॥ ९ ॥

॥ इति श्री स्कन्द पुराणान्तर्गत प्रदोष स्तोत्राष्टक सम्पूर्णम् ॥

॥ शिव अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् / गौरीपति शतनाम स्तोत्रम् ॥

- बृहस्पतिरुनाच

नमो रुद्राय नीलाय भीमाय परमात्मने ।
कपर्दिने सुरेशाय व्योमकेशाय वै नमः ॥ ॥ १ ॥

- वृषभद्वजाय सोमाय सोमनाथाय शम्भवे ।
  दिगम्बराय भर्गाय उमाकान्ताय वै नमः ॥ ॥ २ ॥
- तपोमयाय भव्याय शिवश्रेष्ठाय विष्णवे ।
  व्यालप्रियाय व्यालाय व्यलानाम पतये नमः ॥ ॥ ३ ॥
- महीधराय व्याघ्राय पशुनाम पतये नमः ।
  पुरान्तकाय सिंहाय शार्दुलाय मखाय च ॥ ॥ ४ ॥
- मीनाय मीननाथाय सिद्धाये परमेष्ठिने ।
  कामान्ताकाय बुद्धाय बुद्धिनाम पतये नमः ॥ ॥ ५ ॥
- कपोताय विशिष्टाय शिष्टाय सकलात्मने ।
  वेदाय वेद्जीवाय वेदुह्याय वै नमः ॥ ॥ ६ ॥
- दीर्घाय दीर्घ रूपाय दीर्घार्थया विनाशिने ।
  नमो जगत्प्रतिष्ठाय व्योमरूपाय वै नमः ॥ ॥ ७ ॥
- गजासुर महाकालायन्धकासुरभेदिने ।
  नीललोहित शुक्लाय चंड मुण्ड प्रियाय च ॥ ॥ ८ ॥
- भक्तिप्रियाय देवाय ज्ञात्रे ज्ञानव्याय च ।
  महेशाय नमस्तुभ्यं महादेव हराय च ॥ ॥ ९ ॥
- त्रिनेत्राय त्रिवेदाय वेदान्गाय नमो नमः ।
  अर्थाय चार्थरूपाय परमार्थाय वै नमः॥ ॥१०॥
- विश्वभूपाय विश्वाय विश्वनाथाय वै नमः ।
  शंकराय च कालाय कालावय वरूपणे ॥ ॥११॥
- अरुपाय विरूपाय सूक्ष्म-सूक्ष्माय वै नमः ।
  श्मशान वासिने भूयो नमस्ते क्रत्तिवासिसे ॥ ॥१२॥
- शशांक शेखराये शायोग्रभूमिशयाय च ।
  दुर्गायाय दुर्गपाराय दुर्गावयवसाक्षिणे ॥ ॥१३॥
- लिंगरूपाय लिंगाय लिगानाम पतये नमः ।
  नमः प्रलयरूपाय प्रणवार्थय वै नमः ॥ ॥१४॥
- नमो नमः कारण-कारणाय, मृत्युन्जयायात्म भवस्वरूपणे ।
  श्री त्र्यम्बकायासितकंठशर्व गौरीपते सकलमंगाल्हेतवे नमः ॥ ॥१५॥